

फ़ेहरिस्त

(अ) इबादात	६
(ब) इज्तेमाई सरगर्मियाँ	६
(ज) हुसूले रिज़्के हलाल	६
(ह) खाना खाना और वर्ज़िश	७
(क) सोना व इस्तेराहत	७
(ख) हुसूले इल्म	७
हम दिन कैसे गुज़ारें ?	९
१. तफ़क्कुर	१०
२. कुरआन	१२
३. ईबादात	१३
४. दुआ	१६
५. इखलास	१७
६. जह्दो जेहद	१८
७. सब्र	२०
८. इल्म, आलिम, हुसूले इल्म, तालिबे इल्म	२२
९. नमाज़	२६
१०. इज्तेमाई सरगर्मियाँ	३१
११. सोना	३३
१२. खाना	३४
१३. सेहत	३५
१४. वक़्त	३६

بِسْمِهِ تَعَالَى

وَبِذِكْرِ اللَّهِ الْوَحْدَةِ الْحُجَّةِ بِاللَّيْلِ

हकीक्री मोमिन के मक़ासिद में से एक अहम मक़सदे ज़िन्दगी येह है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मा मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम की एताअत व पैरवी करे। हर मोमिन के लिए येह हुक्म एलाही है कि अपनी ज़ाती ज़िन्दगी में उनके नक़शे क़दम पर चले। ज़िन्दगी के हर उम्र में मोमिन को चाहिए कि वोह अपने हर क़दम को आगे बढ़ाते वक़्त येह देख ले कि वोह रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मा मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के बताए हुए रास्ते पर है या नहीं। ज़िन्दगी में एताअत व पैरवीये रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मा अलैहिमुस्सलाम सिर्फ़ एअ्तेक़ाद और उससे मुतअल्लिक़ अहकाम व अअ़माल जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, ख़ुम्स वग़ैरह तक महदूद नहीं बल्कि इसका तअल्लुक़ रोज़ाना के मसाएले ज़िन्दगी पर भी मबनी है।

इस अज़ीम मक़सद यअ़नी एताअत व पैरवीए रसूल व अइम्मा अलैहिमुस्सलाम को पाने के लिए मोमिन को चाहिये कि नफ़्स का मुहासेबा करने, ख़ुद का तजज़िया व तहलील अन्जाम देने, कमाले इन्सानियत की तरफ़ बढ़ने और अपने हाल को गुजशता दिन के मुक़ाबले मे बेहतर बनाने वग़ैरह को रोज़ाना की ज़िन्दगी में शामिल करे।

दर्ज ज़ैल सुतूर में आपकी तवज्जोह एक इन्तेहाई अहम और बुनियादी मसअले की तरफ़ मबज़ूल कराना मक़सूद है। मुम्किन है आप उससे आगाह न हों या आगाह हों मगर गूनागूँ मसरूफ़ियात की वज्ह से ग़फ़लत का शिकार हों और ऐसा है तो फिर बज़ाहिर ज़िन्दा होते हुए भी मुर्दा हैं। आपकी मुख्तलिफ़ क़िस्म की

मसरूफ़ियात और बेख़बरी आपको हर लम्हा क़त्ल कर रही है। आप इन सुतूर के ज़रीए अपनी तवज्जोह एक बहुत बड़े और अहम मसअले की तरफ़ मबज़ूल फरमाएँ और इस मतलब को सफ़हए दिल पर नक्श फ़रमाएँ, न मअलूम येह मतलब आपको याद है या इससे गाफ़िल हैं।

मुख्तलिफ़ ज़िम्मेदारियों, कारोबार, मुलाज़ेमत, कालेज, स्कूल और ज़िन्दगी की दीगर मुश्किलात ने आपको ऐसा घेर रखा है कि आपको खुद अपना होश भी नहीं और इतना भी सोचने की फ़ुर्सत नहीं कि मैं:

कहाँ से आया हूँ?

क्या कर रहा हूँ?

और कहाँ जा रहा हूँ?

कई साल से आप जी रहे हैं (कितने साल से) आपकी उम्र के क़ीमती लम्हात बड़ी सुरअत के साथ गुज़र रहे हैं। आपने इनकी हरकत व रफ़्तार का एहसास नहीं किया। घड़ियाँ बीत गई, शबोरोज़ गुज़र गए, हफ़्ते भी आए और गुज़र गए, नए साल भी आए और पुराने हो गए। आप हर लम्हा अन्जाने में इन्तेहाई तारीक और सर्द क़ब्र के नज़दीक से नज़दीक तर होते जा रहे हैं मगर कभी सोचा तक नहीं कि मैं कहाँ जा रहा हूँ और कैसे जा रहा हूँ?

आपकी ज़िन्दगी मजमूआ है दिनों और महीनों का, जिनमें आप जी रहे हैं। आप चाहे जितने साल ज़िन्दा रहें आप इन्हीं लम्हों, घड़ियों और दिनों ही का मजमूआ तो हैं। दिन और लम्हे गुज़र रहे हैं आप भी अपनी इन्तेहा की तरफ़ बढ़ रहे हैं। कभी सोचा कि आपने क्या खोया, क्या पाया? ऐ आलमे आख़ेरत के राही क्या तूने अपना रख़्ते सफ़र बाँध लिया है? ज़ादे राह इकट्टा कर लिया है।

जब आप घर से निकलते हैं यक़ीनन किसी मंजिल का इरादा रखते हैं। आपको मअलूम होता है कि आप कहाँ जा रहे हैं या आपको कहाँ जाना चाहिए, मस्जिद,

बाज़ार, स्कूल या कहीं और। इसी तरह आप अपनी गुज़शता उम्र पर नज़र करें और बताएँ कि कहाँ जा रहे हैं? किधर का रुख है और वाक़ेअन जाना कहाँ चाहिए?

ग़ौर फ़रमाएँ कि आप किस सिम्त जा रहे हैं और आप किस मंज़िल की तरफ़ रवाँ दवाँ हैं? क्या आपने अपने अज़्माल के लिए कोई रुख मुअय्यन किया है? आख़ेरत की हयाते जावेदाँ के लिए अस्बाब फ़राहम किये हैं?

ऐ मुसाफ़िरे राहे अदम! जिस राह पर आप गामज़न हैं उसकी मंज़िल मौत है। सबको मौत से हमकनार होना है। बक़ौल अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम आप मौत की तरफ़ गामज़न और मौत आपकी तरफ़ बढ़ रही है। ऐसी सूरत में मौत से मुडभेड़ कितनी क़रीब है।

أَيْنَ تَذْهَبُونَ أَيُّهَا الْمَسَافِرُونَ

“मुसाफ़िरो कहाँ जा रहे हो?”

أَحْسِبَ النَّاسُ أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ

क्या लोगों ने येह ख़याल कर रखा है कि वोह सिर्फ़ इस बात पर छोड़ दिए जाएँगे कि वोह येह कह देंगे कि हम ईमान ले आए हैं और उनका इम्तेहान नहीं होगा।^१

أَفَحَسِبْتُمْ أَنبَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنْتُمْ عَلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ

क्या तुम येह समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है और

तुम हमारी तरफ़ पलटाकर नहीं लाए जाओगे।^१

الْمَيَانِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ

क्या अभी वोह वक़्त नहीं आया है कि जब मोमिनों के दिल यादे खुदा से ख़ौफ़ज़दा हों?^२

अब वक़्त आ गया है कि खुद से पूछिए और ग़ौर फ़रमाइए कि आप अपने रोज़मर्रा के कामों को कैसे अन्जाम देते हैं? दिन का आगाज़ कैसे करते हैं? और उसका इख़तेताम कैसे होता है? यही दिन हफ़्ते में सात मर्तबा आता है और यही हफ़्ते साल में बावन हफ़्ते दोहराए जाते हैं। क्या येह बेहतर न होगा कि कम अज़ कम एक आम और सादा कारोबारी ही की तरह अपनी दिन भर की कारकर्दगी का जाएज़ा ले लें और सोचें कि कितना फ़ाएदा हुआ और कितना नुक़सान?

आपको हिसाब लगाना होगा कि आपके मौजूदा और उस मिसाली दिन में कितना फ़र्क़ है जैसा दिन किरदार के लेहाज़ से होना चाहिए। ताकि इस फ़ासेले को कम से कम कर सकें और अपने इर्तेक़ाई सफ़र को तै कर सकें। आपका हर दिन गुज़शता दिन से बेहतर, हर हफ़्ता गुज़शता हफ़्ते से बेहतर हो और आपके साल जद्दो जेहद पर मुशतमिल हों और जद्दो जेहद भी राहे खुदा में हो।

अब भी इस बात की फ़ुर्सत मौजूद है कि आप एक मिसाली दिन के बारे में सोचें जो “यौमुन फ़ी सबीलिल्लाह” का नमूना पेश करे और उसी की तरफ़ हरकत करें। येह दिन आपके लिए बाबरकत होगा। येह वही दिन होगा जिस की रूह परवर खुशबू दिल व जान को मोअत्तर कर देगी और उसके साथ ही महबूबे हक़ीक़ी की खुशानूदी हासिल होगी।

^१ सूरा मोमेनून : ११५

^२ सूरा हदीद : १६

वोह मिसाली दिन उस वक़्त आएगा जब एक मोमिन की हैसियत से आपकी ज़िन्दगी पर आपकी रूह हाकिम होगी। इस मक़सद के हुसूल के लिए दो चीज़ें इन्तेहाई ज़रूरी हैं।

(१) नीयत व खुलूस

(२) जेहाद व सब्र

लेहाज़ा आपको रोज़मर्रा के कामों की नीयत में ग़ौर करना होगा और उसकी कैफ़ियत व आदाब के बारे में सोचना होगा। आइये अपने उन अज़्माल पर एक नज़र डालें जिन्हें हम रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी में अंजाम देते हैं।

(अ) इबादात

येह लफ़्ज़ आम इबादात को भी शामिल करता है जो ज़िन्दगी के हर रुख़ का नाम है और ख़ास इबादातों को भी जो नमाज़, दुआ, रोज़ा और तिलावते कुरआन और आयात में ग़ौर व फ़िक्र और ज़िक्रे एलाही वग़ैरह पर मुश्तमिल है।

(ब) इज्तेमाई सरगर्मियाँ

जिनका मक़सद मुसलमान भाइयों की मदद, आम लोगों की आसाइश, अवामुन्नास और खुसूसन अइज़ज़ा व अक़रेबा व अह्ले ख़ाना को फ़अज़ाल और सरगर्म बनाना, उनकी तरबियत करना, उनसे हर क़िस्म की सुस्ती और काहिली को दूर करना और उन्हें इस्लामी अक़दार का हामिल बनाना मक़सूद है ताकि इमामे ज़माना अरवाहोना फ़ेदाह की क़ेयादत में अद्ल व इन्साफ़ पर मबनी निज़ामे अद्ल व इन्साफ़ का क़याम अमल में आ सके।

(ज) हुसूले रिज़्के हलाल

अपने अहलोअयाल के नान व नफ़का के लिए कोशिश व जद्दो जेहद करना और इक़तैसादी तौर पर अपने आप को मज़बूत बनाना ताकि इन्सान बा इज़ज़त मुक़ाम

हासिल कर सके। और राहे खुदा में और इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की ख़िदमत मे बेहतर अन्दाज़ में सरगर्मे अमल हो सके।

(ह) खाना खाना और वर्जिश

खाना खाना और वर्जिश करना ताकि इबादाते इलाही के लिए जिस्म चाक़, चौबन्द और सेहतमंद रहे जो कि जद्दो जेहद व इबादात के लिए बुनियादी शर्त है। इसी तरह खाना खाने के आदाब का भी ख़याल रखा जाए।

(क) सोना व इस्तेराहत

नींद एक अजीब दुनिया है जिसने आपकी उम्र के एक तिहाई हिस्से को घेर रखा है। आप इस नुक्ते से हनूज़ ग़ाफ़िल हैं कि उसे किस तरह कार आमद बनाया जा सकता है और इसे एक इबादात में तबदील किया जा सकता है। सोने में भी हद्दे एअ़तेदाल को बरकरार रखना ज़रूरी है ताकि दिन भर की मेहनते शाक़का से जो तवानाई ज़ाएअ़् हुई है उसे दोबारा हासिल करे और अपनी कीमती ज़िन्दगी का भरपूर अन्दाज़ से इस्तेअ़्माल कर सके। यह बात ज़ेहन नशीन रहे कि सोने में तक्ररीबन एक तिहाई ज़िन्दगी को ख़त्म कर देना ख़सारे की बात है। लेहाज़ा उतनी नींद ही ज़रूरी है जो सेहत को बरकरार रख सके और उसके बाद ताज़ा दम होकर इन्सान ज़्यादा क़ूवत के साथ मसरूफ़े कार रह सके।

(ख) हुसूले इल्म

हुसूले इल्म व बहस व मुतालेआ और महारत का हुसूल अपने शरई फ़राएज़ को समझने, सहीह नुक्ताए निगाह के हुसूल, अपने मुल्क को खुद कफ़ील बनाने के लिए मुख़्तलिफ़ शोअ़बों में महारत के हुसूल के लिए इल्मी मैदान में अन्थक कोशिश से दरेग़ नहीं करना चाहिए क्योंकि इसमें खुदा और रसूल और मोमेनीन की इज़ज़त है। 'अलइस्लामो यअ़्लू व ला यअ़्ला अलैह इस्लाम हर चीज़ से

अफ़ज़ल है और कोई चीज़ इस से अफ़ज़ल नहीं।' साथ ही साथ इस मुक़द्दस ज़ेहाद में मुअल्लिम व मुतअल्लिम के तअल्लुकात की भी पहचान होनी चाहिए।

जिस तरह मुतालेआ के लिए एक खास वक़्त मुक़र्रर करना ज़रूरी है उसी तरह मुतालेआ के लिए मवाद का इन्तेखाब भी ज़रूरी है। अच्छी और सालेह बनाने वाली किताबों का मुतालेआ तअमीरे शख़्सीयत में ज़बरदस्त आमिल है। उमूमन मुतालेआ के लिए सुबह का वक़्त मुनासिब रहता है लेकिन ज़ाहिर है कि सुबह (सुबह) को तो इतना वक़्त देना मुशकिल है। चुनान्चे सुबह के साथ साथ दिन में किसी वक़्त और रात को सोने से क़ब्ल भी मुतालेआ को अपनी आदत बनाना ज़रूरी है। अगर नागुज़ीर हालत की बेना पर किसी दिन मुतालेआ न कर सकें तो हफ़्ते के दूसरे दिनों में इस कमी को पूरा करना चाहिए।

आपकी रात दिन की घड़ियाँ उन अअमाल और उनवानात के लिए मैदाने अमल की हैसियत रखती हैं और आप जैसा चाहें (ज़्यादा या कम) उन घड़ियों को इन कामों के लिए इस्तेअमाल में ला सकते हैं। मगर इस नुक्ते की तरफ़ तवज्जोह रहे कि हर इन्सान की क़द्र व वक़अत का दारोमदार अअमाले सालेह के इन्तेखाब पर है। हम ज़ैल में गुज़ीशता उनवानों की तरतीब से बअज़ तजावीज़ पेश करते हैं और येह बात पेशे नज़र रहे कि तालिबेइल्म (स्कूल व कालेज जानेवाले) जुज़अ 'ज' का हिस्सा हुसूले इल्म के लिए सर्फ़करें।

- अ: खास इबादात १ : ३० घन्टे
 ब: इज्तेमाई सरगर्मियाँ ३ घन्टे
 ज: हुसूले रिज़्के हलाल ८ घन्टे (मुलाज़ेमत/कालेज/स्कूल/खानादारी)
 ह: खाना खाना, वर्ज़िश १ : ३० घन्टे
 क: सोना व इस्तेराहत ७ घन्टे
 ख: हुसूले इल्मे दीन ३ घन्टे (उस्ताद, तालिबे इल्म)

हम दिन कैसे गुज़ारें ?

- ५ बजे सुब्ह : बेदारी/नमाज़े शब/नमाज़े सुब्ह
तअक्कीबात और तिलावते कुरआन
- ६ बजे सुब्ह : वर्ज़िश
- ६:३० बजे सुब्ह : मुतालेआ व नाश्ता
- ७:३० बजे सुब्ह : कालेज/दफ़्तर/कारोबार (इसी दौरान नमाज़े ज़ोहरैन की बरवक़्त अदाएगी और खाना)
- ४:३० बजे शाम : इस्तेराहत
- ५:०० बजे शाम : क्लास/मुतालेआ/इज्तेमाई सरगर्मियाँ (इसदौरान नमाज़े मगरेबैन को बाजमाअत अदा करें और रुह परवर मजलिसे अज़ा में शिरकत करें)
- ९:३० बजे रात : खाना व तअलीमे अह्ने खाना
- १०:३० बजे रात : वज़ू व मुहासेबए नफ़्स
- ११:०० बजे राज : इस्तेराहते शब (सोना)

मुन्दर्जा बाला खाका फ़क़त नमूने के तौर पर पेश किया गया है। इसमें तुलूअ व गुरुबे आफ़ताब के लिए निज़ामे औक़ात को खुद मुनज़ज़म करें, नीज़ अपनी मसरुफ़ियात में एअतेदाल का दामन हमेशा थामे रहें और रोज़मर्रा के काम काज के साथ साथ मुतालेआ व इज्तेमाई सरगर्मियों के लिए वक़्त निकालें।

मिसाली दिन की तशकील के लिए अहकामाते खुदा वन्द मुतआल (जो ख़ालिक व राज़िक है) और फ़रामीने मअ्सूमीन अलैहिम्मुस्सलाम (जो पेशवा व औला बित-तसरुफ़ हैं) ग़ौर व ख़ौज़ और राहनुमाई के लिए मौजूद हैं उनमें से चन्द नक़ल किए जा रहे हैं। उमीद है हमारा शुमार हज़रत वलीये अस्त्र अरवाहोना फ़ेदाह के अन्सार व अअ्वान में होगा। इंशा अल्लाह

१. तफ़क्कुर

अल्लाह तआला का इरशादे गरामी है:

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لآيَاتٍ
لِّأُولِي الْأَلْبَابِ. الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ
وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا
بَاطِلًا

बेशक ज़मीन और आसमान की खिलकत और रात दिन के फेर बदल में अरबाबे दानिश के लिए निशानियाँ हैं। वोह लोग जो अल्लाह को खड़े, उठते बैठते और करवट के बल लेते हुए याद करते हैं और (जब) ज़मीन व आसमान की खिलकत पर गौर करते हैं (तो कहते हैं) हमारे रब ने इसे अबस पैदा नहीं किया है।^१

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया:

إِفْكِرْ تَسْتَبْصِرْ

“गौर व ख़ौज़ करो ताकि बसीरत हासिल कर सको।”^२

^१ सूए आले इमरान : १६०-१६१

^२ फ़िहरिस्ते मौज़ई शर्हे गुरर व दुररे आमुदी, बाबुलफ़िक्र अज़ जलालउद्दीन हुसैनी अरमवी “मुहदिस”

इसी तरह इरशाद है:

عَلَيْكَ بِالْفِكْرِ فَإِنَّهُ رُشْدٌ مِّنَ الضَّلَالِ وَ مُصَدِّحُ الْأَعْمَالِ.

“गौर व फ़िक्र तुम्हारे लिए ज़रूरी है इसलिए कि येह गुमराही के मुक्राबले में राहनुमाई है और इससे अज़्माल की इस्लाह होती है।”^१

^१ फ़िहरिस्ते मौज़ई शर्हे गुरर व दुररे आमुदी, बाबुलफ़िक्र अज़ जलालउद्दीन हुसैनी अरमवी “मुहद्दिस”

२. कुरआन

इरशादे इलाही है:

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ

बेशक यह कुरआन सीधी राह की हिदायत करता है।^१

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَنْ أُمِرَ عَلَى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا

क्या वोह कुरआन में तदब्बुर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं।^२

لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِّنْ

خَشْيَةِ اللَّهِ،

अगर यह कुरआन हम पहाड़ों पर नाज़िल करते तो तू देख लेता कि वोह अल्लाह के डर से लरज़ा, तुकड़े तुकड़े हो जाता।^३

रोज़े क़यामत पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का बारगाहे अहदीयत में शिक्वा:

وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا

(उस दिन) रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेह आवाज़ देंगे ऐ मेरे रब्ब मेरी क़ौम ने इस कुरआन को नज़र अन्दाज़ कर दिया है।^४

१ बनी इस्राईल : ९

२ मुहम्मद : २४

३ हश्र : २१

४ अल-फुरक़ान : ३०

३. ईबादत

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से एक शख्स ने पूछा; इबादत क्या है? फ़रमाया:

حُسْنُ النِّيَّةِ بِالطَّاعَةِ مِنَ الْوَجْهِ الَّذِي يُطَاعُ اللَّهُ مِنْهُ.

हुस्ने नीयत से इस तरह खुदा की इताअत की जाए जैसे उसकी इताअत का हक़ है।^१

(यअनी उन अअमाल को अन्जाम देना जो खुदा को पसन्द हों और येह भी उन हुदूद के अन्दर जिनका तअय्युन उन बरगुज़ीदा नुमाइन्दों ने किया हो। दूसरे लफ़्ज़ों में शरीअत के दाएरे में रहते हुए अहकामे खुदावन्दी की बजाआवरी का नाम इबादत है)।

चुनान्चे इरशादे इलाही है:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

जिन्नात और इन्सानों को अपनी इबादत ही के लिए ख़ल्क़ किया है।^२

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है:

وَاعْلَمَ أَنَّهُ غَيْرُ مُحْتَاJٍ إِلَى خِدْمَتِكَ وَهُوَ غَفِيٌّ عَنِ عِبَادَتِكَ وَ

^१ (मअानिल अख़बार, सफ़हा : २४)

^२ अज़ज़ारियात : ५६

دُعَائِكَ وَإِنَّمَا دَعَاكَ بِفَضْلِهِ لِيُرْحَمَكَ وَيُيَعِدَكَ مِنْ عُقُوبَتِهِ وَ
يُنْشِرْ عَلَيْكَ مِنْ بَرَكَاتِ حَنَانِيَّتِهِ

तुम्हें मज़्लूम होना चाहिए कि वोह (अल्लाह तआला) तुम्हारी ख़िदमत का मोहताज नहीं और वोह तेरी इबादत व दुआ से बेनियाज़ है। उसने अपने फ़ज़ल व करम से इसलिए अपनी इबादत की दअ्वत दी ताकि तुझे पर रह्य करे और अपने अज़ाब से तुझे दूर रखे और उसके रह्य व करम की बरकात की बशारत नसीब हो।

وَيَهْدِيكَ إِلَى سَبِيلِ رِضَاكَ وَيَفْتَحْ عَلَيْكَ بَابَ مَغْفِرَتِهِ

और तुझे अपनी रज़ा और खुशनूदी की राहों की हेदायत करे और तेरे लिए अपनी मग़फ़ेरत के दरवाज़े खोल दे।^१

इरशादे परवरदिगार है

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنْ اْعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ

हमने हर उम्मत की तरफ़ रसूल भेजे (ताकि उन तक येह पैग़ाम पहुँचाएँ) कि अल्लाह की इबादत करें और ताग़ूत से इज्तेनाब करें।^२

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

^१ (शर्ह फ़ारसी मिस्बाहुशशीरआ, जिल्द १, सफ़हा ९३ (तर्जुमा में मामूली रद्द व बदल के साथ))

^२ अन्नम्ल: ३६

مَنْ أَطَاعَ رَجُلًا فِي مَعْصِيَةٍ فَقَدْ عَبَدَهُ

जो कोई मअसियत में किसी की इताअत करेगा गोया उसने उसकी इबादत की।^१

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम का इरशादे गरामी है:

لَا تَكُونَنَّ عَبْدًا غَيْرِكَ وَقَدْ جَعَلَكَ اللَّهُ سُبْحَانَهُ حُرًّا

तू किसी का गुलाम न बन तुझे तो खुदा ने आज़ाद पैदा किया है।^२

^१ काफ़ी, जिल्द २, सफ़हा ३९८

^२ सफ़ीनतुल बेहार, बहसे दुआ

४. दुआ

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

قُلْ مَا يَعْبُؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ

(ऐ रसूल) कह दीजिए कि अगर तुम्हारी दुआएँ न होतीं तो परवरदिगार तुम्हारी परवाह भी न करता।^१

الدُّعَاءُ مُمُخُّ الْعِبَادَةِ

दुआ इबादत का मगज़ है।^२

^१ अल-फ़ुरक़ान : ७७

^२ सफ़ीनतुल बेहार, बहसे दुआ

५. इख़लास

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ. أَلِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ

पस अल्लाह तआला की इबादत कर, उस हाल में कि दीन ख़ालेसतन उसी के लिए समझ। आगाह हो दीन ख़ालिस ख़ुदा ही के लिए है।^१

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

إِلْخُلَاصُ مِلَاكُ الْعِبَادَةِ

इबादत का दारोमदार ख़ुलूस पर है।^२

عَلَيْكَ بِإِلْخُلَاصٍ فَإِنَّهُ سَبَبُ قَبُولِ الْأَعْمَالِ وَأَفْضَلُ الطَّاعَةِ.

इख़लास तुम्हारे लिए इन्तेहाई ज़रूरी है इसलिए कि येह अज़माल के क़बूल होने का बाइस है और बेहतरीन इताअत है।^३

لَا يَكْمَلُ صَالِحُ الْعَمَلِ إِلَّا بِصَالِحِ النِّيَّةِ

सालेह अमल, सालेह नीयत के बग़ैर मुकम्मल नहीं हो सकता।^४

^१ सूए जुमर : २, ३)

^२ गुरर व दुरर, बाबुलइख़लास

^३ गुरर व दुरर, बाबुलइख़लास

^४ गुरर व दुरर, बाबुलइख़लास

६. जहो जेहद

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाता है:

إِنَّا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَ
جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، أُولَئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ.

बेशक ईमान वाले वोह लोग हैं जो ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूल पर और कभी शक न करे और अपनी जान व माल से अल्लाह की राह में लड़े, वही लोग सच्चे हैं।^१

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَهُمْ سُبُلَنَا، وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ
الْحُسَيْنِينَ.

और जिन्होंने हमारे लिए मेहनत की हम उन्हें अपनी राहें समझा देंगे और बेशक अल्लाह नेकी करनेवालों के साथ है।^२

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

بِالْجَاهِدَةِ صَلاَحُ النَّفْسِ

^१ अलहुजरात ४९:१५

^२ अनकबूत २९:६९

नफ़्स की इस्लाह जेहाद के ज़रीए ही हो सकती है।^१

الْجِهَادُ عِبَادَةُ الدِّينِ وَمِنْهَا جُ السُّعْدَاءُ

जेहाद दीन का सुतून है और सज़ादत मंदों का मसलक व तरीका है।^२

^१ गुरर व दुरर, बाबुल जेहादुन्नफ़्स

^२ गुरर व दुरर, बाबुल जेहादुन्नफ़्स

७. सब्र

इरशादे इलाही है:

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

सब्र से काम लो इसलिए कि ख़ुदा सब्र करने वालों के साथ है।^१

إِنِّي أَنبَأُ بِالنَّاسِ أَنَّ الصَّابِرِينَ أَجْرُهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ

अल्लाह साबेरीन को हद से ज़्यादा अज़्र अज़ता फ़रमाता है।^२

जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

الصَّبْرُ ثَلَاثَةٌ صَبْرٌ عِنْدَ الْبُصِيْبَةِ وَ صَبْرٌ عَلَى الطَّاعَةِ وَ صَبْرٌ عَنِ

الْمَعْصِيَةِ فَمَنْ صَبَرَ عَلَى الْبُصِيْبَةِ

सब्र तीन क्रिस्म का है: मुसीबत के वक़्त का सब्र, इताअत के मौक़े पर सब्र, और गुनाह के वक़्त का सब्र।^३

हज़रत अबू अबदुल्लाह इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

الصَّبْرُ مِنَ الْإِيْمَانِ بِمَنْزِلَةِ الرَّأْسِ مِنَ الْجَسَدِ فَإِذَا ذَهَبَ الرَّأْسُ

ذَهَبَ الْجَسَدُ كَذَلِكَ إِذَا ذَهَبَ الصَّبْرُ ذَهَبَ الْإِيْمَانُ

^१ अल-अनफ़ाल (८): ४६

^२ अल-जुमर (३९): १०

^३ आईने ज़िन्दगी, आयतुल्लाह मिर्ज़ा जवाद तेहरानी, सफ़हा : १२९

सब्र को ईमान से वही निस्बत है जो सर को बदन से है। अगर सर ख़त्म हो जाए तो बदन भी ख़त्म हो जाएगा। इसी तरह सब्र ख़त्म हो जाए तो ईमान भी ख़त्म हो जाएगा।^१

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

بِالصَّبْرِ تُدْرِكُ مَعَالِيَ الْأُمُورِ

ग़ैर मअ़मूली अअ़माल सब्र ही के ज़रीए अन्जाम पा सकते हैं।^२

بَشِّرْ نَفْسَكَ إِذَا صَبَرْتَ بِالتَّجْرِحِ وَالظَّفْرِ

अगर तुम सब्र का मुज़ाहेरा करो तो अपने आपको फ़तह व नुसरत और कामियाबी की बशारत दो।^३

لَا ظَفَرَ لِمَنْ لَا صَبْرَ لَهُ

जो शख़्स सब्र नहीं कर सकता वोह कभी कामियाब नहीं हो सकता।^४

१ आईने ज़िन्दगी, आयतुल्लाह मिर्ज़ा जवाद तेहरानी, सफ़हा : १ २ ९

२ गुरर व दुरर, बाबुस्सब्र

३ गुरर व दुरर, बाबुस्सब्र

४ गुरर व दुरर, बाबुस्सब्र

८. इल्म, आलिम, हुसूले इल्म, तालिबे इल्म

खुदा वन्द करीम कुरआन मजीद में फ़रमाता है:

يُرفِعُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ، وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ

अल्लाह उनके दरजात को बलन्द करेगा जो ईमान रखते हैं और जिन्हें इल्म से नवाज़ा गया है।^१

وَاتَّقُوا اللَّهَ، وَيُعَلِّمُ اللَّهُ، وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

और डरते रहो अल्लाह से और अल्लाह तुमको सिखलाता है और अल्लाह हर एक चीज़ को जानता है।^२

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ

यक़ीनन बन्दगाने खुदा में से ओलमा ही अल्लाह से डरते हैं।^३

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ

और न पीछे पड़ जिस बात की ख़बर तुझको नहीं।^४

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

१ अल-मुजादतला (५८): ११

२ अल-बक्रा (२): २८२

३ अल-फ़ातिर (३५): २८

४ बनी इसराईल (१७): ३६

الْعِلْمُ خَيْرٌ دَلِيلٍ.

इल्म बेहतरीन राहनुमा है।^१

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ تَعَلَّمَ فِي شَبَابِهِ كَانَ بِبَنْزِلَةِ الرَّسْمِ فِي الْحَجَرِ وَمَنْ تَعَلَّمَ وَهُوَ
كَبِيرٌ كَانَ بِبَنْزِلَةِ الْكِتَابِ عَلَى وَجْهِ الْمَاءِ

जो शरूख्स जवानी में इल्म हासिल करे वोह पत्थर पर निशान के मानिन्द है और जो शरूख्स बुढ़ापे में इल्म हासिल करे वोह पानी की सतह पर लिखने के मुतरादिफ़ है।^२

हज़रत इमाम जैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

فَإِنَّ الْعِلْمَ إِذَا لَمْ يُعْمَلْ بِهِ لَمْ يَزِدْ صَاحِبَهُ إِلَّا كُفْرًا وَلَمْ يَزِدْ مَنْ
اللَّهُ إِلَّا بُعْدًا

इल्म पर अमल न किया जाए तो वोह इल्म ख़ुदा से दूर होने का बाइस बन सकता है।^३

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

^१ गुरर व दुरर, बाबुलइल्म

^२ बेहारुल अनवार, जिल्द १, सफ़हा २२२, हदीस ६

^३ बेहारुल अनवार, जिल्द २, सफ़हा २८, हदीस ६

فَإِنَّ الْعَامِلَ بَعْدَ عِلْمِهِ كَالسَّائِرِ عَلَى غَيْرِ طَرِيقٍ فَلَا يَزِيدُهُ بَعْدَهُ
عَنِ الطَّرِيقِ إِلَّا بُعْدًا مِنْ حَاجَتِهِ وَالْعَامِلُ بِالْعِلْمِ كَالسَّائِرِ عَلَى
الطَّرِيقِ الْوَاضِحِ فَلْيَنْظُرْنَا ظَرْفًا سَاءَ لَهُ أَمْرًا رَاجِعًا

आमिल ग़ैरे आलिम उस शरब्स की मानिन्द है जो अपना रास्ता छोड़कर किसी दूसरे रास्ते पर चल रहा हो। यह शरब्स जितना जितना अपने रास्ते से दूर होगा उतना ही अपनी हाजत से दूर होता जाएगा और आमिल बा इल्म उस शरब्स की मानिन्द है जो वाज़ेह रास्ते पर चल रहा हो पस देखना होगा कि चलने वाला आगे की तरफ़ बढ़ रहा है या पीछे की तरफ़।^१

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

وَأَمَّا حَقُّ سَائِسِكَ بِالْعِلْمِ فَالتَّعْظِيمُ لَهُ وَ التَّوْقِيرُ لِجُلْسِهِ وَ
حُسْنُ إِسْتِيعَابِ إِلَيْهِ وَ الإِقْبَالُ عَلَيْهِ وَ المَعُونَةُ لَهُ عَلَى نَفْسِكَ
فِيمَا لَا غَنَى بِكَ عَنْهُ مِنَ الْعِلْمِ بِأَنْ تُفَرِّغَ لَهُ عَقْلَكَ وَ تُحَضِّرَهُ
فَهَبَكَ وَ تَذَكِّي لَهُ [قَلْبَكَ] وَ تَجَلِّي لَهُ بِصَرَكَ بِتَرْكِ اللَّدَاتِ وَ
نَقْصِ الشَّهَوَاتِ ...

तेरे इल्मी सरपरस्त और मुअल्लिम का हक़ येह है कि उसकी

^१ बेहारुल अनवार, जिल्द १, सफ़हा २०९, हदीस ६

तअज़ीम करो और उसकी मजलिस (वआज़ व नसीहत) की तौक़ीर करो और ख़ूब दिलचस्पी से सुनो। हुसूले इल्म के सिलसिले में अपने उस्ताद से तआवुन करो बई मअ़नी कि अपनी अक़्ल को उस्ताद के लिए फ़ारिग़ रखो और लज़ज़तों को तर्क और शहवतों को कम करके अपने फ़ह्य व इदराक को हाज़िर और क़ल्ब को पाक रखो और अपनी निगाहों को जेला बरख़ो।^१

हज़रत इमाम जअ़फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

لَسْتُ أَحِبُّ أَنْ أَرَى الشَّابَّ مِنْكُمْ إِلَّا غَادِيًا فِي حَالَيْنِ إِمَّا عَالِبًا أَوْ مُتَعَلِّبًا.

मैं तुम में से किसी भी जवान को इन दो हालतों के अलावा किसी और हालत में देखना पसंद नहीं करता: या तो वह खूद साहेबे इल्म हो या फिर इल्म हासिल कर रहा हो।^२

^१ तोहफ़ुल उकूल, सफ़हा १८७

^२ अमाली-ए-शेख-ए-तूसी, सफ़हा ३०४

९. नमाज़

कुरआने मजीद में इरशादे रब्बुलइज़्ज़त है:

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي، وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي

बेशक मैं अल्लाह हूँ। कोई मअबूद नहीं है सेवाए मेरे, पस मेरी बन्दगी करो और मेरे ज़िक्र के लिए नमाज़ काएम करो।^१

إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ، وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ

बेशक नमाज़ बेहाई और बुरी बात से रोकती है और अल्लाह की याद सबसे बड़ी है।^२

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ. الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ. الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤْنَ.

फिर ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से बेख़बर हैं और वोह जो दिखलावा करते हैं।^३

अमीरुल मोमेनी हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

اللَّهُ أَكْبَرُ فِي الصَّلَاةِ فَاتَّعَمُّودُ دِينِكُمْ.

^१ ता हा २०:१४

^२ अन्कबूत २९:४५

^३ अल-माज़न १०७:४-६

ख़ुदारा ख़ुदारा नमाज़ का ख़याल रखो क्योंकि येह तुम्हारे दीन का सुतून है।^१

تَعَاهَدُوا أَمْرَ الصَّلَاةِ وَحَافِظُوا عَلَيْهَا وَاسْتَكْبِرُوا مِنْهَا وَتَقَرَّبُوا
بِهَا فَإِنَّهَا كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا.^२

أَلَا تَسْعُونَ إِلَى جَوَابِ أَهْلِ النَّارِ حِينَ سَأَلُوا مَا سَلَكَكُمْ فِي سَفَرٍ
قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ.^३

وَأِنَّهَا تَحْتُ الدُّنُوبِ حَتَّى الْوَرَقِ وَتُطْلَقُهَا إِطْلَاقَ الرِّبِّقِ وَشَبَّهَهَا
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْحَبَّةِ تَكُونُ عَلَى بَابِ الرَّجُلِ فَهُوَ يَغْتَسِلُ
مِنْهَا فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ خَمْسَ مَرَّاتٍ فَمَا عَسَى أَنْ يَبْقَى عَلَيْهِ مِنْ
الدَّرَنِ وَقَدْ عَرَفَ حَقَّهَا رِجَالٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ لَا
تَشْغَلُهُمْ عَنْهَا زِينَةُ مَتَاعٍ وَلَا قُرَّةُ عَيْنٍ مِنْ وَلَدٍ وَلَا مَالٍ يَقُولُ
اللَّهُ سُبْحَانَهُ رِجَالٌ لَا تَلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ

^१ तरजुमा और शरहे नहजुल बलागा, मक्तूब ४७, सफहा ९६८, अज़ फैजुल इस्लाम (रह.)

^२ सूरह निसा, आयत १०३

^३ शूरह मुद्स्सिर, आयात ४२-४३

الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ...^१

وَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَصَبًا بِالصَّلَاةِ بَعْدَ التَّبَشِيرِ لَهُ
بِالْحِجَّةِ يَقُولُ اللَّهُ سُبْحَانَهُ: 'وَأَمْرٌ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَ أَصْطَبِرُ
عَلَيْهَا...'^२

فَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ وَيَصْبِرُ عَلَيْهَا نَفْسَهُ.^३

नमाज़ की पाबन्दी और उसकी निगहदाश्त करो और उसे ज़्यादा से ज़्यादा बजा लाओ और उसके ज़रीए से अल्लाह का तक्ररुब चाहो क्योंकि नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त की पाबन्दी के साथ वाजिब की गई है।

क्या (कुरआन में) दोज़खियों के जवाब को तुमने नहीं सुना कि जब उनसे पूछा जाएगा कि “कौन सी चीज़ तुम्हें दोज़ख की तरफ़ खींच लाई है? तो वोह कहेंगे कि हम नमाज़ी न थे।

बिला शुब्हा नमाज़ गुनाहों को झाड़ कर इस तरह अलग कर देती है जिस तरह (दरख़्त से) पत्ते झड़ते हैं और उन्हें इस तरह अलग करदेती है जिस तरह (जानवरों की गरदनों से) फन्दे खोलकर उन्हें रेहा किया जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व

^१ सूह नूर, आयत ३७

^२ सूह ताहा, आयत १३२

^३ अयज़न, खूल्बा नं. १९०, सफहा ६४३

आलेही व सल्लम ने नमाज़ को उस गर्म चश्मे से तशबीह दी है जो किसी के घर के दरवाज़े पर हो और वोह उसमें दिन रात पाँच मरतबा गुस्ल करे तो क्या उमीद की जा सकती है कि उसके (जिस्म पर) कोई मैल रह जाएगा ? नमाज़ का हक़ तो वही मरदाने बाख़ुदा पहचानते हैं जिन्हें मताएँ दुनिया की सज धज और माल व औलाद का सुरु र दीदा व दिल उससे ग़फ़लत में नहीं डालता। चुनान्चे अल्लाह सब्हानहू का इरशाद है कि “कुछ लोग ऐसे हैं कि जिन्हें ख़ुदा का ज़िक्र और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से न तेजारत ग़ाफ़िल करती है, न ख़रीद व फ़रोख्त और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम बावजूदेकि उन्हें जन्नत की नवेद दी जा चुकी थी (बकसरत) नमाज़ पढ़ने से अपने को ज़हमत व तज़्ब में डालते थे। चूँकि उन्हें अल्लाह का इरशाद था कि “अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और ख़ुद भी उसकी पाबन्दी करो।” चुनान्चे हज़रत अपने घरवालों को खुसूसियत के साथ नमाज़ की ताकीद भी फ़रमाते थे और ख़ुद भी उसकी कसरत से बजाआवरी में ज़हमत व मशक्क़त बर्दाशत करते थे।

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

مَنْ صَلَّى رَكَعَتَيْنِ يَعْلَمُ مَا يَقُولُ فِيهِمَا انْصَرَفَ وَلَيْسَ بَيْنَهُ وَ

بَيْنَ اللَّهِ ذَنْبٌ

जो शरख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़े और वोह येह समझ रहा हो कि मैं नमाज़ में क्या कह रहा हूँ तो जब नमाज़ से फ़ारिग़ होगा तो उसके

अअमाल में कोई गुनाह बाक़ी न रहेगा।^१

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

صَلِّ الصَّلَاةَ لِقَوْتِهَا الْمَوْقَّتِ وَلَا تُعَجِّلْ وَقْتَهَا لِفَرَاغٍ وَلَا تُؤَخِّرْهَا
عَنْ وَقْتِهَا لِاسْتِغْثَالٍ وَأَعْلَمْ أَنَّ كُلَّ شَيْءٍ مِنْ عِبَادِكَ تَبِعَ لِمَصْلَاتِكَ

नमाज़ को उसके मुकर्ररा वक़्त में अदा करो। फ़ुर्सत की वजह से उसे क़ब्ल अज़ वक़्त न पढ़ो और न किसी मसरुफ़ियत की वजह से उसे मुकर्ररा वक़्त से मोअख़़बर करो और तुम्हें मअलूम होना चाहिए कि तेरे दूसरे अअमाल तेरी नमाज़ के ताबेअ हैं।^२

^१ काफ़ी, किताबुस्सलाते, नं. ११२

^२ तरजुमा व शर्ह नहजुल बलागा (फ़ैज़ुल इस्लाम), मकतूब २६, सफ़हा ८७९

१०. इज्तेमाई सरगर्मियाँ

इरशादे एलाही है:

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ، يَأْمُرُونَ
بِالْعُرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ، أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ، إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में सब एक दूसरे के वली और मददगार हैं कि ये सब एक दूसरे को नेकियों का हुक्म देते हैं और बुराइयों से रोकते हैं। नमाज़ क़ाएम करते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह और रसूल की इताअत करते हैं। यही वोह लोग हैं जिन पर अनक़रीब ख़ुदा रहमत नाज़िल करेगा।^१

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

الْمُسْلِمُ أَمُّ الْمُسْلِمِ هُوَ عَيْنُهُ وَمِرَاتُهُ وَدَلِيلُهُ لَا يَخُونُهُ وَلَا يَخْدَعُهُ
وَلَا يَظْلِمُهُ وَلَا يَكْذِبُهُ وَلَا يَغْتَابُهُ

मुसलमान, मुसलमान का भाई, उसकी आँख, आईना और राहनुमा होता है। मुसलमान, मुसलमान के साथ ख़ेयानत नहीं करता। उसे धोका नहीं देता, उस पर जुल्म नहीं करता। झूठ नहीं बोलता और उसकी ग़ीबत भी नहीं करता।^२

^१ सूरए तौबा: ७१

^२ आईने ज़िन्दगी सफ़हा ९८, मन्कूल अज़ वसाएलुशशीआ (शेख़ हुर्रें आमेली)

हज़रत रसूलखुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

जिसकी सुब्ह इस हालत में हो कि वोह मुसलमानों के मसाएल को अहम्मीयत न देता हो वोह मुसलमान नहीं है और जो शख्स किसी (बेसहरा) को आवाज़ बलन्द करते हुए कि ऐ मुसलमानो (मेरी फ़रियाद सुनो) और उसकी दाद रसी न करे वोह भी मुसलमान नहीं।

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

سَيَّلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَحَبَّ النَّاسَ إِلَى اللَّهِ قَالَ أَنْفَعُ
النَّاسِ لِلنَّاسِ

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से पूछा गया कि अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? आपने फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा महबूबे खुदा वोह है जो सबसे ज़्यादा लोगों को फ़ाएदा पहुँचाए।^१

हज़रत रसूलखुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

الْخَلْقُ كُلُّهُمْ عِيَالُ اللَّهِ فَأَحَبُّهُمْ إِلَى اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ أَنْفَعُهُمْ لِعِيَالِهِ

तमाम मख्लूक़ात अल्लाह तआला के अयाल (रोज़ी पानेवाले) हैं। खुदा को सबसे ज़्यादा अज़ीज़ वोह है जो उसके अयाल (रोज़ी पाने वालों) को ज़्यादा फ़ाएदा पहुँचाए।^२

^१ आईने ज़िन्दगी, सफ़हा ९८

^२ आईने ज़िन्दगी, सफ़हा ९८

११. सोना

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

بُسُّ الْغَرِيمِ النَّوْمُ يُفْنِي قَصِيرَ الْعُمْرِ وَيُفَوِّتُ كَثِيرَ الْأَجْرِ

सोना बहुत बड़ा क़र्ज़़खाह है जो तुम्हारी कोताह उम्र को फ़ना कर देता है और कसीर अज़्र से महरूम कर देता है।^१

مَنْ كَثُرَ فِي لَيْلَةٍ نَوْمُهُ مِنَ الْعَمَلِ مَا لَا يَسْتَدْرِكُهُ فِي يَوْمِهِ

जो शरब्स रात को ज़्यादा सोता है वोह ऐसे अज़माल से महरूम हो जाता है जिनका हासिल करना दिन में मुम्किन नहीं।^२

^१ गुरर व दुरर, बाबुन्नौम

^२ गुरर व दुरर, बाबुन्नौम

१२. खाना

इरशादे एलाही है:

كُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا

खाओ और पिओ फुज़ूल खर्ची न करो।^१

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सालम ने फ़रमाया:

كَثْرَةُ الْأَكْلِ وَالنُّومِ يُفْسِدَانِ النَّفْسَ وَيَجْلِبَانِ الْمَضْرَّةَ

ज़्यादा सोना और ज़्यादा खाना रुह को तबाह कर देता है और खसारे का बाइस बनते हैं।^२

हज़रत रसूलोखुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

كُلْ وَأَنْتَ تَشْتَهِي وَأَمْسِكْ وَأَنْتَ تَشْتَهِي

तभी खाओ जब भूख लगे और पूरी तरह शिकम सेर होने से कब्ल खाना छोड़ दो।^३

इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

जो येह चाहे कि उसका बदन सहीह व सालिम और जिस्म भी मुनासिब रहे वोह रात को कम खाया करे।^४

^१ सूए अअराफ़: ३१

^२ गुरर व दुरर, बाबुलअकल

^३ बेहारुल अनवार, जिलद ६ २, सफ़हा २९०

^४ तम्बीलुह खचतिर, जिल्द १, सफ़हा ४७

१३. सेहत

अमीरुल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

بِالْعَافِيَةِ تُوجَدُ لَذَّةُ الْحَيَاةِ

ज़िन्दगी की लज़ज़त सेहत में मुज़मर (छिपी) है।^१

شَيْعَانٍ لَا يَعْرِفُ فَضْلَهَا إِلَّا مَنْ فَقَدَهَا: الشَّبَابُ وَالْعَافِيَةُ

दो चीज़ों का एहसास सिर्फ़ उसी शख्स को होता है जो इन दो को खो देता है: एक जवानी और दूसरी आफ़ियत व सेहत।^२

^१ गुरर व दुरर, बाबुलआफ़िया

^२ गुररुलहेकम व दुररुलहेकम, हदीस ५७६४

१४. वक़्त

हज़रत अली अलैहिस्सलमा ने फ़रमाया:

مَا ضَى يَوْمِكَ فَائْتِ وَأْتِيَهُ مُتَّهِمٌ وَوَقْتُكَ مُغْتَنَمٌ.

तुम्हारा गुज़रा हुआ कल जा चुका है आने वाले वक़्त की सिर्फ़ तवक़्को ही है (लेहाज़ा) मौजूदा वक़्त को बेहतरीन मोहलत समझो।^१

مَا أَسْرَعُ السَّاعَاتُ فِي الْيَوْمِ وَأَسْرَعُ الْأَيَّامُ فِي الشَّهْرِ وَأَسْرَعُ الشُّهُرُ فِي السَّنَةِ وَأَسْرَعُ السِّنِينَ فِي الْعُمُرِ.

दिन के वक़्त कितनी जल्दी गुज़रते हैं, महीने में दिन भी जल्दी चले जाते हैं, साल के महीने भी ज़ूद गुज़र होते हैं और उम्र के साल भी तेज़ी से बीत जाते हैं।^२

हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:

كُنْ عَلَى عَمْرِكَ اشْحُ مِنْكَ عَلَى دَرْهَبِكَ وَدِينَارِكَ

अपनी उम्र के सिलसिले में अपने दिरहम व दीनार से ज़्यादा बख़ील बनो।^३

^१ गुररुलहेकम, ४७३

^२ नहजुल बलागा, २७९

^३ अमाली शेख़ तूसी (र.अ.), १९/५२७